Vol. 4, Issue: 7, August: 2016
(IJRSML) ISSN: 2321 - 2853

श्रीकृष्ण के साहित्य में जीवनकला

प्रो.जगदीशचंद् माछी

ह्रदम्भोजे कृष्ण: सजल- जलद- श्यामलयतनु:
सरोजाक्ष: स्रग्वी मुकुटकटकाध्याभरणवान् ।
शरद्राका- नाथ – प्रतिम – वदन: श्रीमुरलिकां
वहन् ध्येयो गोपीगणपरिवृत: कुंकुमचित: ॥

अर्थात् –हर मनुष्यको –अपने ह्रदयमे जलयुक्त, मेघसमान श्यामलशरीरवाले, कमलसमाननेत्रवाले, वैजंयतीमालाकोधारण करनेवाले,मुकुट और कंकण, आदि को धारणकरनेवाले, आदि अंलकारो से युक्त, शरदऋतु के चंद्रसमान तेजस्वीमुखवाले, मुरलीधारी, गोपीगणसे परिवृत,और कुंकुमसे लेपायमान, भगवानश्रीकृष्णका ध्यान करना चाहिए.[१]

विश्र्वसाहित्य मैं श्रेष्ठ और सर्वोत्तम जगतकर्ता के दो कमलपत्र के नेत्र समान, रामायण और महाभारत अप्रितम् आर्ष काव्य हैं। सर्वदा वंदनीय हमारी यहि मातृभूमिमै भगवानने कई सगुण स्वरूप अवतारोको धारण किया। बहुधरा वसुंधरा ने जगतको बहुत कुछ दिया हैं। धर्म, नीति, तत्वज्ञान, और मार्गदर्शन देनेवाले असंख्य चरित्रोकी वो जन्मदायीनी हैं । अपने भारतभूमिकी यह परंपरा सदीओं से रही हैं-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन: ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवा: ॥[२]

भगवान जागतिककारणोसर(Low of Universal Necessity) उच्च चारित्रवान चरित्रोको, ऋषिओ,आचार्यो,संतो, युगपूरूषोको जगतमैं भेजता हैं, वक्त आने पर स्वयं अवतार धारण करके-

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमर्धस्य, तदात्मानं सृजाम्यह्म् ॥
परित्राणाय साधुनां, विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय, संभवामि युगे युगे ॥ [३]

जगतप्रांगणको स्वच्छ करके, लोगोको मार्गदर्शित करके अपना कार्य करके चले जाते हैं ।

खुद भगवानने विभूतियोगमें –**मुनिनामप्यहं व्यास:**।[४] कहा है वो मर्हषि- भगवान बादरायणने, अपौरूषेय वेदोका गहन अध्ययन करके उसका समुचित पृथ्थकरण कीया। रत्नं समागच्छतुं कांचनेनभाव से विघ्नहर्ता गणेशजी की लेखनसहायता से- वेदोकासार –श्रीकृष्णही परब्रह्म स्वरूप हैं, समस्त मानवजगतको मार्गदर्शन

और जीवनजीने कि कला देना, ऐसा जिसे बुध्दिशाली विद्वान् लोग "पंचम वेद" के नामसे जानते हैं, मानते हैं- महाभारत नामक काव्य दिया। उस महाभारतकी अप्रितम फलश्रुति याने -श्रीकृष्णके मुखसे निकला हुआ अमृत- याने **"श्रीमद्भगवदगीता"**मैं न मरनेवाली विजयीकला अर्जुनको निमित्त बना के जगतको दी।

भगवानशंकराचार्यका यह उपदेश समस्त मनुष्यजातिको मार्गदर्शक देता है, क्योंकि वास्तविक भगवानश्रीकृष्णही, अनादि एवं स्वयंब्रह्मतत्त्वस्वरूप सत्य और अनंतरूप है.मधुसुदन सरस्वती कहते है कि- ईस जगतमें –**कृष्णात्परं किमपि तत्वमहं न जाने।**[५] **"सत्यं ज्ञानमन्तं नित्यमनाकाशं परमाकाशं गोविन्दं परमानंदम्"**[६] **और श्रीकृष्णस्तु भगवान् स्वयं।**[७]समस्तप्राणीओके आधारस्थानं, पूर्ण पूरूषोत्तमरूप लोकत्रयपुरमूलस्तभं, जगत का आधार हैं.जगत को भक्तलोग **"लोकवत् तु लीलाकैवल्यं "**[८] समजते हैं, सभी कारणो के कारण स्वरूप हैं, महाप्रभुवल्लाभाचर्यजी कहते है कि- **मधुराधिपतेरखिलंमधुरम्** [९] सर्वगुणसंपन्नं, सर्वकलाओके ज्ञाताका वर्णन करना असंभव ही हैं. भागवदमैं भगवानने कहा है कि-**मद्भक्तानां च ये भक्ता: ते मे प्रियतमा मता:।**[१०] फिर भी बडे बडे मनीषीण कहते है कि- भगवान गोविंन्द के आगे हमारी वाणी मनसहित वापस आ जाती हैं- **"यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ।"**[११]

जगतकर्ता कि हर एक क्रिडा –लीला एवं कला जगप्रसिध्ध हैं। श्रीकृष्णने सबको जीवनको कैसे – **जीवेम शरद: शतम्। मोदाम: शतम्।**[१२] जैसे वेदोका विचार स्थिर करने की कला दिखायी । समग्र संस्कृत वाऽमयमें श्रीकृष्णकी जीवनलीला एवं कला दोनों महाभारत, श्री.गीता, भागवद्ग्रंथ, हरिवंश एवं पुराणो मैं आज स्पष्ट दिखाई देती हैं। साहित्य मैं नाट्यकला हो या काव्यकला हो ऊनकी वीर एवं शृंगार आदि रसोसें सुशोभित अद्भूत जीवनकलाका निर्देश कविओने मुक्तमन से किया हैं।

महाभारतके प्राणस्थानिय श्रीकृष्णोपदिष्ट श्रीमद्भगवद्गीता के प्रकाशसे ही व्यासदेवने उपनिषदो,अपौरूषेय श्रुतिवाक्योकि व्याख्या और उनका समन्वय करके ब्रह्मसूत्र या वेदान्त-विज्ञानकी रचना की हैं। ईन सबके अंदर ही प्रभुने जीवन, कला, कर्मादिश,भावार्दश,और दार्शनिक, सिध्धातों को चिरस्थायी रूप प्रदान किया हैं ।श्रीकृष्णके द्रारा प्रचारित आर्दशोको ही व्यासजीने सनातन आर्यसाधनाका यथार्थ तात्पर्य बताकर प्राचीनशास्त्रोकी व्याख्या और नये शास्त्रोका निर्माण किया हैं ।

श्रीमद्भगवद्गीता मनुष्यजग़त की सभी समस्याओंका अमृतोपाय हैं। जो सच्चे मनसे भक्तियुक्त और अविचल श्रध्धासे प्रभुके आर्दशोको, उनके आदेशोको मानता है उनके जीवनमैं ही खुशी और आनंदी की लहर बहा करती हैं, गीतामैं प्रभु कहते है कि-

मच्चित्ता मद्गतप्राणा, बोधयन्त: परस्परम् । कथयन्तश्र्व मां नित्यं, तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥[१३]

अर्जुन गीता का सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

भगवान सर्व कलाओ के कर्ता एवं ज्ञाता हैं- 64 कलाओंकी बात करे तो (1) नृत्य (2) वाध्य (3) गायन (4) नाट्य (5) ईन्द्रजाल (6) नाटकआख्यायिका ज्ञान, (7) सुंगधित चीजे बनाना, (8) बेताल को वश (9) फुलोकेंआभूषणो से श्रृंगार करना, (10) बालक्रिडा (11) विजयप्राप्तकरानेवाली विध्या (12) मंत्रविध्या (13) शकुन, अपशकुन जानना (14) रत्नोकों विविध तरहसे काट्ना (15) मिट्टीकेयन्त्र बनाना, (16) सांकेतिक भाषा बनाना (17) जलको बांधना (18) बेल-बूटे बनाना (19) चावल और फूलोको सजाना (20) फूलो की सेज बनाना, (21) तोता-मैनाकीभाषाबोलना (22) वृक्षोकीचिकित्सा (23) पशु-पंखीओको लडाने की कला (24) उच्चाटन की विधि (25) घर आदि बनाने की कला (26) गलीचे,दरि बनाने की कला, (27) बढई की कला, (28) बाण और पंलगबनानेकी कला (29) पाक कला (30) हस्त कला (31) ईच्छित वेषधारण करने की कला (32) पेय कल (33) धुतकला (34) समस्तछंदोकाज्ञान (35) वस्त्र गोपन-परिधानकला (36) वस्तुएवं व्यक्तिको आकर्षित करने की कला (37) कपडे –गहने बनाना (38) हारमाला-कला (39) जडीबुट्टीयोका प्रयोग (40) कठपूतली कल (41) प्रतिमाकला (42) केशगुंफनकला (43) पहेलियाबुझाना (44) सिलाईकला (45) बालोकीसफाई कल (46) मनकी बात बता देना (47) सर्व भाषाओंका ज्ञान (48) मलेच्छ काव्योका ज्ञान (49) रत्नपरिक्षण कला (50) सोना-चांदी बना लेना (51) मणियोका रंग पहचानना (52) खानोकी पहचान (53) चित्रकारी (54) दंत-वस्त्र एवं अंग रंगन(55) शय्यारचना (56) मणिफर्शकला (57) कूटनीति (58) ग्रंथोकीपढाई (59) नई-नईबातेनिकालना (60) समस्यापूर्तिकला (61) काव्यपूर्तिकला (62) समस्तकोषोकाज्ञा (63) छल-कपट कला (64) हाथीदांत एवं शंखसे कानके गहने बनाने कला. **ये सभी कलाओ मैं श्रीकृष्ण पारंगत थे।**

ईन सुचितकलाओ मैं से सर्वकलाओंका समुचित उपयोग योग्यस्थानोमैं श्रीकृष्णके जीवनमैं दिखाई देता हैं। **विजयीविध्या की कलाका** उपयोग प्रभुने बखुबीसे किया हैं। जीवनमैं अगर कुछ पाना हैं,प्रभु के ईस जगमैं रहना हैं तो,या दैवीजीवन जीना हैं, देव बनता है तो सर्वप्रथम प्रथमं दैवीगुण “ **अभयं”** गुण जीवनमैं लाना अत्यांवश्यक हैं। बात बातमैं रोना, डरना भला क्या जीवन हैं ? हमारा रूदन भीतिसे हैं, जब की अर्जनका रोना विषादयोग बना क्योकिं वो युध्धसे, मृत्यु से नहीं डरा,वो दयावश,करुणासे समस्त समाजका हितैषी था। अर्जनके विषादको दुर करने के लिए प्रभु- **क्लैब्यं मा स्म गम: पार्थ नैतत्त्वच्युतपपध्यते।क्षुद्रं ह्रदयदर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥**[१४] कहके वीरत्व का, अमृत्वभावसे खडा किया।प्रभुने डराया नहीं, अगर मर भी गया तो- **हतो वा प्राप्यसि स्वंग जित्वा वा भोक्ष्यसे..........युध्धाय कृतनिश्र्चय:।**[१५] मानवीजीवनका अटल सत्य- अगर स्वधर्म करते करते मरोगें तो स्वंगका रास्ता तुम्हारे लिए सदैव खुला ही हैं। यदि प्रभुकी कृपा हो तो –

मूकंकरोति वाचालं पऽगुं लऽघयते गिरिम् ।यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥ [१६]

ये जीवन की विजयीकला हैं। मनुष्यजीवनमैं अगर **आत्मविश्र्वास और ईशविश्र्वास** आ गया फिर तो जीवन मैं विजय हि विजय हैं । जीवनमैं भोगभुक्ति और प्रभुभक्तिके लिए **"अभयं" नामक दैवीगुण – नायं आत्मा बलहीनेन लभ्यो ।**१७ की नजरसे भी जरूरी हैं ।

उधम: साहसं धैर्यं, बुध्धि: शक्ति: पराक्रम:। षडेते यत्र वर्तन्ते , तत्र देवो हि साह्यकृत ॥१८

अभयं, प्रयत्नवाद गीताका सर्व प्रथम शास्त्र हैं। कुछ किये बिना कुछ भी प्राप्त नहीं होता हैं। श्रीकृष्णने ये **जीवनकला** जीवन के अंतिम क्षण तक नहीं छोडीं, जरापारधिने जब श्रीकृष्ण पर बाण चलायो तो दु:ख दर्द से आह तक भी नहीं भरी, जरापारधिके मन मैं अपराधभावना भाव न आये ईस बातका ध्यानभी रखा हैं । बाकी – **कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्पवृध्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत:।** १९कहने वाले श्रीकृष्णको भला कौन मार सकता हैं?

कालं कलाकलातीतं कलिताशेषं कलिदोषघ्नं । कालत्रयगतिहेतुं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ २०
श्रीकृष्णको नमन करना हि हमारी सर्वश्रेष्ठ भक्ति हैं ।

श्रीकृष्णके जीवनमैं **बालक्रिडा नामक कला** सहज थी । वो खेल खेल मैं ही क्रान्ति कर देते थे । बालको को बचपनमैं खेलने देना चाहिए, प्राकृतिक पेडपौधो,वनस्पति,पशु,जैसे विषयक जिज्ञासाओ को उजागर करना हैं नही की उसका शमन। परस्परसात्विक एवं निर्दोष खेलोसे शारिरीक, बौध्धिक और मानसिक, हारजीतमैं संयमता,सरलताका विकास सहज होता हैं।अपनी छुपी हुई शक्तिओको बहार निकालना यही शिक्षणका सही उदेश्य हैं। वास्तविक होकीकी क्रिडा,तीरंदाजी,पोलो,गेंडी-दडा,एवं घोडेसवारीका आधुनिक स्वरूप शायद हो सकता हैं । हर व्यक्तिके जीवनमैं कुछ ध्येय होना चाहिए जो समस्त संसारको सुखी कर शके, समाधानी बना शके । ध्येयप्राप्ति के लिए सुख दु:ख सहन करना उसे हि तप कहा जाता हैं, **तपोद्वं सहनं** । बच्चे प्रभुकी तरह मनके सच्चे भोले होते हैं। इन बालकोको बचपनसे ही कुछ अच्छे संस्कार मिल जाय तो वो भी अशक्य कार्य को शक्यतामैं बदल सकते हैं ।

श्रीकृष्णने बचपनमैं ही क्रिडा करके गोपो और गोपीओ के सहारे, अपने साहससे मित्रोकी सहायता से कालिय नागको वश मै किया, उसके शिर पै नृत्यभी किया, सहि समज देकर सरलता से गोवर्धनपर्वतको उठवाया,संध मै रहने से कई समस्याओंका समाधान सरलतासे हो जाता हैं ,ये बालक्रिडा हैं। संयुक्त कुंटुब की भावना बचपन से शिखानी पडती हैं जो आगे संस्कार का रूप धारण करती हैं । other is not other but he is my divine brother **वसुदैवकम् कुंटुबं** की भावनाका सिंचन वैरवृतिको प्राय: नष्ट कर देती हैं । **संघे शक्ति कलौ युगे** –ये सोक्ति बालबुध्धिवाले लोगो को जागतिक समाधान समझना चाहिए । श्रीकृष्ण वृष्णीसंघ का संचालक था। Life is a **Game, Play it** .खेल खेल मे बडे असुरोको धुल चटानेवाला वो श्रीकृष्ण भी मिट्टी खाते

यशोदामातासे डरना मानो ये बालक्रिडा मातृभूमिसे प्यार और पवित्रता का संदेश, मेरा अस्तित्व 14 भुवनो मैं, सर्वत्र हैं, हम सबको मातृभूमिसे प्यार होना ही चाहिए। **मृत्तिका हन मे पापं** –मेरे समस्त पापोका नाश करने वाली जन्मभूमि स्वर्ग से सुंदर लगनी चाहिए । वो ही सच्ची राष्टभावना हैं। मातृभूमिको लहुलुहाण करनेवाले कांटो को जडमूलसे उखाड फ़ेकना वो ही श्रीकृष्णके जीवनका ध्येय था । बुरे के सामने वो कभी झुके नहीं और कभी डरे नहीं । कंटको को दूर करनेकी **कला बालक्रिडा** जन्म से हि सिध्ध थी ।

गोपीओं की मटकी फोडने वाले श्रीकृष्ण बडे नेता थे, **नेता बनना भी एक कला हैं**। अज्ञानको दूर करना और स्रीओ के, युवतिओ के द्रारा क्रांति लानेवाला जगतकागुरु श्रीकृष्ण ही था।Have or Have not जैसी वैश्विक सामाजिक समस्या का हल देनेवाले महागुरू थे। मानसशास्र और अर्थशास्त्रका को सच्ची दिशा देनेवाला, स्त्रीओंको शिक्षण देनेवाला, पहले अपनोका पेट भरो, और बाद मैं दुसरो का,घरकी चीजो का घरमै उपयोग करो, दुष्टो को दुध-दहीं बेचोगे तो दुष्ट-पुष्ट होकर दुर्बलको मारेगें।किसीको भी शारिरीक क्षति पहुचाये बीना मात्र मटकी फोडने से क्या भला नुकशान?किन्तु उसके बदले मैं असुरो के सामने लडने के स्त्रीओ मैं उत्साह भरनें वाले, **बालक्रिडाप्रिय** प्रभु थे। गोपाल गो- ईन्द्रीयो को पाल पोष-करके पुष्टी देनावाला, 16 हजारस्त्रीओको आत्महत्या जैसे जघनन्य पापसे रोकने वाला, द्रौपदीकी ईज्जत बचाने वाला, मीरां के जहर को पीने वाला,**- न मे भक्त: प्रणश्यति** ।[२१]को यथार्थ करनेवाला, उत्तरा के गर्भ को जीवित रखनेवाले, श्रीकृष्ण हि थे ।

सभी **समस्याओ की पूर्ति** यहभी **एक कला** हैं।ये भी एक जीवनकला हैं । एक दुर्बल विचारसे, अज्ञान से, गाण्डीव कब हाथ से छूट गया उसका भी पता न चला वैसे अर्जुन को **स्वधर्म निधनं श्रेयं।**[२२] और **किर्ति पालय्।** की उत्तम सलाह से अर्जुन का मोह दूर हो गया। वो लडने तैयार हैं- **नष्टोमोह: स्मृतिर्लब्धा.....करिष्ये वचनं तव्॥** [२३] (18/73) **ईन्दीयाणां मनश्र्वास्मि** ।[२४] (10/22) प्रभु वास्तवमै चचंल मन का ज्ञाता हैं, जगत में उनसे बडा कोई मनोवैज्ञानिक-मनोज्ञाता नही हैं। हमैं हमारी स्मृति-शक्ति देनेवाला, श्रीकृष्णकी स्मृति और विस्मृति देने की ये कला **सर्वश्रेष्ठ कला हैं । सर्वस्यचाहं ह्रदि संन्निविष्टो,मत्त: स्मृतिज्ञानमपोह्नं च** ।[२५]जगतका सबसे बडा कलाकार, सारे जगतका वो गुरू “ **श्रीकृष्ण वंन्दे जगतगुरूं** ” यू ही ऋषिओने नहीं कहा होगा।

मानवसमाजमें धर्म, प्रेम,शांति, एवं एकता के झंडे को नित्य और ऊचा बनाये रखने के लिए क्षात्रशक्ति की आवश्यकता हैं। क्षत्रियराजाओकी प्रधानता और संग्रामशक्तिकी रक्षा के लिए ही धर्म के आदर्श को छोड देनां,ऐक्य स्थापन के संकल्पको त्याग देना एवं प्रेम और साम्य के प्रचार कार्य से, संस्कृति के कार्य से मूंह फ़ेर लेना वो सबसे बडी का कायरता हैं, मनुष्यत्व का अपमान हैं। ईसलिए तो प्रेमधनमूर्ति श्रीकृष्ण खुद होनेपर ईस कापुरुषता को पसंद नहीं करते थे। विरोधीप्रबल शक्तियो के भयसे या ईनलोगोके साथ संघर्षकी आशंका से वै आर्दशका त्याग करने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने जब यह अनुभव किया कि उनके आदर्श प्रतिष्ठापथ में बहुत से कांटे देश और समाजके साधनक्षेत्रमें अपनी द्रढ-जड जमाये फ़ैले हैं। जिसको जड्से उखाडे बिना लक्ष्य

की सिध्धि नहीं होगी, धर्मराज्यकी स्थापना नहीं होगी, प्रेम और ऐक्य का सर्वत्र प्रचार नहीं कीया जा सकेगा, तब उन्होने स्वंय ही अपनी विप्लवमूर्ति प्रगट कर दी औंर अवस्थानुसार क्षात्रभाव तथा दण्ड्नीति का अवलम्बन करके विनाशाय च दुष्कृताम्, धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे – ईस बात को सिध्ध किया।

समस्त कोषो का ज्ञान ये भी एक बडी कला हैं। वो कला भी उनके जीवनमें दिखाई देती हैं। **समस्त कोषो का ज्ञान** सुनने से, पढने से आता है। विश्व मानवमात्र के लिए हमारे ऋषिओमुनिओने एक हि मंत्र दिया है- कि **तस्मात् स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्।**[२६]वो क्यु? जीवन का अंतिम ध्येय आत्मविकास, जीवन का श्रेष्ठ सबंध यानि प्रभु प्रेम-सबंध,**-श्रुतं हरति पापानि।** सद् विचार सुननेसे पाप यानी क्षुद्रता, लाचारी,लधुताग्रंथि स्वाध्यायश्रवण से चले जाते हैं, सद्विचार से ही वसुदैव कुंटुम्बकी भावना बहती हैं, स्थिर होती हैं।सदविचार मनकी वैरवृति, द्वेषभाव को दूर करता हैं। सामाजिक विषमताओको भूलके प्रभुके दरबार में हम सब एक ही पिता की- श्रीकृष्णकी संतान हें । **Divine Brotherhood under the fatherhood of GOD. दैवीभार्तृभाव स्थिर होता हैं।** यहीं सभी कोषो का या कहो तो वेदो का सार यही हैं, **जीवो जीवस्य जीवनम् ।** हर एक व्यक्तिको प्यार एवं भावपुष्टी चाहिए,एक जीव दुससे, बडे जीव की सौहार्दभावनासे ही आगे बढता हैं,यह शुभभाव **महाप्रभुजी** अच्छी तरह से समझते थे ईसलिए ही शायद उन्होने अपने संप्रदायका नाम **पुष्टिसंप्रदाय** रखा होगा। एक सुप्रसिध्ध भजन है कि- **વૈષ્ણવજન તો તેને રે કહીએ જે પીડ પરાઈ જાને રે.**[२७]

श्रृष्ण जगत गुरू तो है , किन्तुं वो समस्त ग्रंथो का सार भी हैं ।**जीवन मे ज्ञान एवं शिक्षा कैसे प्राप्त करना चाहिए वो भी एक कला ही हैं,** 64 दिनो मे 64 कला मे प्राविण्य करनेवाले प्रभुभी ने अपनी प्राचीनतपोवनविध्या प्रणाली मै हि जीवनदिव्यतासे भव्य बनता हैं , वही समज के साथ वो क्षिप्रा नदी के तट पर गुरुसांदिपनी के आश्रम में सादाई से विध्या प्राप्त करने गये थे । ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरुकी आवश्यकता हैं। गुरु-शिष्य परंपरा को मान्य करते हुए, दोनो के बीच नि:स्वार्थ प्रेम-संबध बढता रहे फिर–**ततविध्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं, ज्ञानितस्तत्वदर्शिन ॥**[२८]भाव से ज्ञान प्राप्त कर ने से जीवनमे – **न हि ज्ञानेन सद्रशं, पवित्रमिह विद्यते । तत्स्वयं योगसंसिध्ध:, कालेनात्मनि विन्दति ॥**[२९] जगत कर्ताने यज्ञोपवित् के बाद विद्या प्राप्ति के लिए बंधन का स्वीकार किया । **विद्या विनयेन शोभते ।**[३०] आश्रमजीवन कितना नि:स्वार्थ और प्रेममय होता है वो देखकेर प्रभुभी बडे गद गदित हो उठे थे । जगत की सुख शांति तो नि:स्वार्थ भाव से मानवसमूहपूंज के लिए स्वंय की आहूति देना ही यज्ञ हैं।उनके संग सुंदर विध्यार्थी मित्रोको आनंदित करके जीवन मे हमे भी श्रीकृष्ण जैसा कार्य करना हे, वो प्रेरणा प्राप्त करते थे । सुदामा कोई सामान्य ग़रीब ब्राह्मण नही था, उसने भी प्रभु जेसा कार्य जीवनभर किया। प्रभुके विश्वास को – **मम वर्त्मानुवर्तन्ते, मनुष्या: पार्थ सर्वश॥**[३१] (4\11) को सिध्ध करने वाला, जीवनभर अविश्रांत कर्मयोग करनेवाला ही श्रीकृष्ण का मित्र बन शकता हें ।

जो दूसरो के लिए नि:स्वार्थ भाव से कुछ कर मिटता हो, मानवतावादी द्रष्टिकोणवाला हो,वो ही सच्चा श्रीकृष्ण का मित्र एवं भक्त हैं। जीवन को केसे जीना हे तो कोई श्रीकृष्ण से ही शीखे। "My Life is my massage"[३२] –गांधीजीने शायद श्रीकृष्णके जीवन से ही सीखा हो ! बडे बडे ग्रंथोको अपनी भ्रान्तग्रंथओ के शिकार बनने वाले बुध्धिवादीओ, जीवनके सिध्धांत पर मात्र निबंध लिख देने कुछ नहीं होता ।अगर कुछ सिखना है तो उनकी शरण मे हि हम सब का कल्याण हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्यजीने जो – जीवन मंत्र दिया- **श्रीकृष्ण शरणं मम ।**[३३]**(श्रीकृष्णाश्रय)** प्रभु खुद कहते है कि –

सर्वधर्मान्परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥[३४]
श्रीकृष्ण विशालह्रदय और प्रेम एवं करुणा के सम्राट थे।

आज विद्यालयो मे दुर्बल विध्यार्थीओ की ठ्ठा–मश्करी (regigng)मानो जेसे कोई आम बात हैं । लेकिन श्रीकृष्णमे दुर्बलको सबल बनाने के कला सहज सिध्ध थी। गुरुभी श्रीकृष्ण ईस कलासे प्रभावित थे, गुरुने श्रीकृष्णको विध्यार्थी नेता बनाया था और सभी को ये आदेश दिया था कि-"आप सब श्रीकृष्ण के निर्णय को ही मान से स्वीकृती देगें । मेरा कल्याण मुझे ही करना हैं, तो मुझे श्रम करना पडेगा । **उध्धरेत्मनात्मानं, नात्मनमवसादयेत्। ......आत्मैव रिपुरात्मन:॥**[३५]**यह ब्रह्म-वाक्यको सिध्ध करने की कला प्रभु के जीवन में थी।**

श्रीकृष्णका सगुण रुप धारण करने का कारण धर्म पर जो ग्लानि आ गई थी उसे साफ़- सूथरा करना, सांस्कृतिक चिरंतनमूल्यो का पुन: प्रस्थापन करना था । व्यासके ग्रंथो का प्रमुख विषय **श्रीकृष्ण** ही था । व्यासजीके कारण से ही जगत को –अदभूत गुह्य ज्ञान की, सामान्य जनको राजकुमार बनाने की विध्या प्राप्त हुई। संजय गीताजी के अंतिम अध्याय मैं –

व्यासप्रसादात् श्रुतवान्, एतद्गुह्यमहं परम्। योगं योगेश्र्वरात्कृष्णात् , साक्षात्कथयत: स्वयम् ॥[३६]

व्यास एवं **श्रीकृष्ण** के प्रति **कृतज्ञता** व्यक्त करता हैं। जीवन में गीताज्ञान सबसे महान है। गीताज्ञानका अगर पान नही किया तो – शंकराचार्यजी कहते है कि- गीता के गोविन्द को भजो।

भगवदगीता किंचिदधीता गंगाजललवणिकापीता। सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा तस्य यम: किं कुरुते चर्चाम् ॥
भज गोविन्दं ,भजगोविन्दं, भजगोविन्दं मूढमते। प्राप्ते संन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृण करणे ॥5॥[३७]

जीवनव्यर्थ हि हैं। ईस लिए जब तक जगन्नाथ अनुकुल है तो –" **अनुग्रह: पुष्टिमार्गे नियामक:।** भगवान का अनुग्रह-कृपा ही समग्र जीवन का नियामक बनी रहती हैं।[३८] (सिध्धांतमुक्तावली) ये बात का निर्देश महाप्रभुजी हमे करते है।

श्रीकृष्ण राजनैतिककला –कूटनीति के महानायक थे । वो कोई देश के राजा नहीं थे, लेकिन वो राजाओ के कर्ता थे। वो kingmaker थे । जन-जगतकल्याण के लिए सहि **कूटनीति**का उपयोग करनेवाले राजनीतिज्ञ थे। शिखंडी को कवच बनाके –भीष्म पितामहको मरवाया। नरो वा कुंजरो वा, या कर्ण पर बाणचलाने का आदेशदेनेवाला,जरासंध को चिर-फ़ाडके खत्म करवाया, युध्ध के पूर्व पांडवोका राजदुत बनके, वृष्टी करके आधी जीत प्राप्त करनेवाला, द्रोपदी को अंखड- सौभाग्यवति का आर्शीवाद दिलानेवाला, दुर्योधन की जंघा पर प्रहार करने की प्रेरणा देनेवाला,सुदर्शन चक्र-पराक्रम से शिशुपाल का शिर काटनेवाला, मथुराके लोगो की भलाई के लिए रणछोड बनने वाले, रुकमणीसे राजनैतिक ब्याह रचाने वाले, हंस और डिंभीक को चतुराई से बिना शस्त्रसे खत्म करनेवाले वो प्रभु ही थे ।सांस्कृतिक उत्थान के लिए सुभद्रा की शादी अर्जुनसे करानेवाले वो जगत के श्रेष्ठत्तम् राजनैतिककला से विभूषित पूर्ण-पूरूषोत्तम थे । मुझे ना राजा बनना है, ना राज्य करना हैं, धर्म संस्थापन कार्य को ही जीवनमंत्रबनाने वाले, निश्चितकार्यको पूर्ण करने लिए त्वरित कदम भरनेवाले अग्रणी थे ।

सभी **भाषाओं का ज्ञान** रखनेवाला- और सबको देनेवाला विश्वका रात- दिन ध्यान रखनेवाला, सर्वशास्त्रोकें ज्ञाता वो ही हैं । **श्रीकृष्ण** प्रेमकी साक्षात् प्रतिमा थे। वो प्रेम के देवता और अधिष्ठता थे । ईस ही कारण से विश्ववरूपदर्शनसे भावुक अर्जुनकी भावांजलिरूप विश्ववधर्मको मान्य हो ऐसी प्रार्थना, प्रेमकी अंतिम पराकाष्ठा हैं। **सुत्र एव मणि गणा । मयि एव सर्व वर्तते ।**[३९] सभी **भाषाओं का अंतिम सार,ज्ञान – तत्त्वमसि ।**[४०]ही हैं । मैं सबका हुं और सब मेरे से ही हैं,ये बात को जीवन सिध्धांत समजने वाला, समझानेवाला श्रीकृष्ण थे। जगतके बडे तत्वचिंतक –**H.G.WELLS** ने -Outlines Histroy of world नामक अपनी किताब में ईस बात की स्वीकृति की है कि- जहां सांप्रादायिक द्वेषो का नामोनिशान न हो, वैसा हि नि:स्वार्थ धर्म मानवसेवा(Selfless Human Service) या ने की निष्काम कर्मयोगका धर्म ही मान्य होगा।[४१] सामान्य विश्ववधर्म के लिए आवश्यक सर्वतत्व अर्जुन की प्रार्थना मे हैं । गीता के हर एक अंलकारयुक्त शब्द शब्द मे नि:स्वार्थ सेवा का ही आदेश हैं । **बट्राल रसेल ने – Social Recontraction** मे सर्व धर्मो की चर्चा का सार दीया । उसने ये बात कही- “ I It is only when the two elements are intimetily, blended the religion becomes a powerfull force in moulding society. **एक ऐसा धर्म हो जो जगत के उलटे-सूलटे प्रवाह में अडग़भाव से खडा रह शके, जगत के समस्तजनो को सहि राह का निर्देश कर शके।**[४२] मात्र विश्ववशांति के लिये जो धर्म की आवश्यकता हैं वो व्यक्ति,समाज, एवं जगतके बाह्य और आंतरिक विचारो पर अंकुश रख शके। समग्र विश्ववकी एकता धर्म और आध्यामिक शक्ति बीना शक्य नहि हैं । **अर्जुन की प्रार्थना ही वैश्विक-प्रार्थना बन शकती हैं ।**

हिमालयसे भी उच्च जिनकी गरिमा हैं, वे श्रीकृष्णका प्रत्येक कार्य- कलामय था। विश्व-सन्मानीय वो किसीके सामने न झुकनेवाले, वक्त आने पर- राजसुर्ययज्ञ भोजप्रंसगमें झुठे पत्ते फेंकना कार्य सहर्ष स्वीकार करते हैं। कोईभी यज्ञिय कार्य छोटा नहीं होता हैं ये राह देनेवाला, बडे दिलवाला **हरि,** सर्वजनो का कर्ता-हर्ता हैं। ईस क्षणभंगूर जीवनकी सहायता से ही ईहलोक एवं परलोक, श्रेय और प्रेयकी प्रेरणा देनेवाला, श्रीकृष्ण प्रभु– सुबहमें अंहकारयुक्त स्मृति शक्ति देनेवाला, भोजन पचाके शक्तिदेनेवाला, सभी चिंताओ हर के रात्रिको शांतिदेनेवाला हैं।त्रिकाल-संध्या द्रारा शास्त्रोक्तविधि एवं वेदसारयुक्त वाणीसे कृतज्ञताभाव से प्रभु को याद करना हर एक मनुष्यका कर्तव्य हैं। हमसब भारतीयजन आर्यपूजक संस्कृतिके चाहक और वाहक हें।"**कृण्ववन्तो विश्र्वं आर्यम् ।**[४३] हमारा ध्येय एवं कर्तव्य हें, ये कला श्रीकृष्णप्रभु के साहित्यमै सर्वत्र स्पष्टरूप से दिखाई देती हैं। **अपि चेतसु दुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।**[४४] जैसी मातृवात्सल्य भाव से हमे पापीलोको को भी जिनेकी जिज्ञासा देनेवाला, **मन्मना भव मदभक्तो मध्याजी मां नमस्कुरु: ।**[४५] की बात कहके प्रभुप्रिय बनने का, तो कभी – **मोघाशा मोधकर्मणा .... मोहिनी श्रिता:।**[४६] तरह पशुसे भी बदत्तर जीवन जीनेवालो की प्रति क्रोध प्रगट करकेभी दैवीगुणमय जीवन जीने का सुचित संदेश देते हैं। **पशुत्वसे मानव्य, मानव्यसे देवत्व जीवन निर्माण के लिए आत्मिकबल होना चाहिए ।वो आत्मिकबल देने का कार्य गीताके माध्यम से श्रीकृष्ण कीया हैं।**[४७]

आज के कलियुग मैं भी –प्रात:स्मरणीय प.पू.पाडुंरंगशास्त्री- दादाजीने योगेश्र्वर-श्रीकृष्णके विचारों को जीवनमंत्र बनाके, गीता के अमृतंरुप विचार से लाखो लोगोके जीवन में मनुष्यत्व निर्माण किया। लोगो मे मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्या:। योगेश्र्वर की ये जीवनकला समझाने के लिए आजीवन अविश्रांत अकल्पनीय प्रयन्त करनेवाले "युगपुरुष" को कोटि कोटि नमन।

शास्त्रेषु भारतं सारं तत्र नामसहस्त्रकम् ।
वैष्णवं कृष्णगीता च तज्ज्ञानान्मुच्यतेऽञ्जसा ॥
न भारतसमं शास्त्रं कुत एवानयो: समम् ।
भारतं सर्ववेदाश्र्च तुलामारोपिता: पुरा ॥[४८]

समस्तशास्त्रो का निचोड भारत हैं, उसमें भी गीता एवं विष्णुसह.नाम ही श्रेष्ठ है, जिनके परिज्ञानसे मानवमुक्त हो जाता हे। अनेक दु:खोसे त्रस्त अनेक प्राणियोंको संसारसे छुटकारा दिलानेके लिये, सरस, सरल, मधुर ,रोचक, तथा गम्भीरतासे "अभय" देनेवाला, सार्वजनीन,मनोहारी सर्वाऽगीण, व्यापक, नि:सन्धिग्धरूपसे यदि कोई हैं तो , वह एक महाभारत – एवं ग़ीता ही हैं। सभी प्रात: स्मरणीय आचर्योने, भारत के सर्वश्रेष्ठ पंचरत्नोमें भी श्रेष्ठत्तम मध्यरन्तरूप – **""गीतारत्नसे""** अपरिचित भारतवर्षमे क्या, संसारमे भी भाग्यहीन कुछ ईने-गिने ही

असितगिरसमं स्यात् कज्ज्लं सिन्धुपात्रे, सुरतरुवरशाखालेखीनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥ ४९

ये बात पूर्ण पूर्णपूरूषोत्तम श्रीकृष्णप्रभु के जीवनके विषयमे नि:संदेह सत्य ही हैं। हम जैसे अल्पमतिवाले, जो सारे जगतका गुरू "**श्रीकृष्ण वंन्दे जगतगुरूम्** "हे ईनके प्रति मात्र भक्ति-भावसे नम्रतासे नमन करना ही हमारी जीवन की कला बने। प्रभु आप तो-**भ्रजे व्रजैमण्डण्नं समस्त पापखंडन ,स्वभक्तचितरज्जनं सदैव नन्दनन्दम्॥** ५० हम जैसे भक्तो के पाप नाशक हे । श्रीकृष्णप्रभु- हम आपको किचिंत समज सके ईस लिए हमे स्थिरबुध्धिशक्तिलक्ष्मी दे। **भगवानपाडुंरगरूप श्रीकृष्णका जीवन जो "न भुतो न भविष्यति " है उनके चरणो में मेरा नमन।**

पादटीप

१.प्रार्थनाप्रीति. १६/१.
२.मनुस्मृति. २/२०,
३.श्रीमद्भगवदगीता, ४/८
४. श्रीमद्भगवदगीता, ११/२५
५. पुष्टिमार्ग अने स्वाध्याय प्रवृति. पान.नं.
६. प्रार्थनाप्रीति. १६/१ (गोविदांष्टकम्)
७. श्रीकृष्णाश्रय –वल्लभाचार्यजी.
८. शांकरभाष्य ब्रह्मसुत्र-२
९. प्रार्थनाप्रीति. १६/१
१०. श्रीमदभागवदग्रंथ.
११. तैतरियोपनिषद.
१२. अर्थववेद, ३ कांड दिर्घाष्यसूक्त ११/४
१३. श्रीमद्भगवदगीता, १०/९
१४. श्रीमद्भगवदगीता, २/७
१५. श्रीमद्भगवदगीता, २/३७
१६. श्रीगीतामहात्म्यं –श्लोक-७
१७. मुण्डकोपनिषद.२/४
१८. सुभाषितरत्नभांडागार
१९. श्रीमद्भगवदगीता, ११/३२
२०. गोविदांष्टकम्. श्लोक
२१. श्रीमद्भगवदगीता, ९/३१

२२. श्रीमद्भगवदगीता, ३/३५.
२३. श्रीमद्भगवदगीता, १८/७३
२४. श्रीमद्भगवदगीता, १०/२
२५. श्रीमद्भगवदगीता, १५/१५.
२६. तैतरियोपनिषद.
२७. नरसिंह महेताना भजनो.
२८. श्रीमद्भगवदगीता, ४/३४.
२९. श्रीमद्भगवदगीता, ४/३८.
३०. सुभाषितरत्नभांडागार.
३१. श्रीमद्भगवदगीता, ४/११.
३२. सत्यना प्रयोगो.
३३. वल्लभाचार्यजी का श्रीकृष्णाश्रय.
३४. श्रीमद्भगवदगीता, १८/६६.
३५. श्रीमद्भगवदगीता, ६/५.
३६. श्रीमद्भगवदगीता, १८/७५
३७. प्रार्थनाप्रीति. १९/५.
३८. सिध्धांतमुक्तावली.
३९. श्रीमद्भगवदगीता, ७/७.
४०. छांदोग्यपनिषद.
४१. श्रीकृष्ण जीवन दर्शन. (प.पू.पाडुंरंगशास्त्री के संकलित प्रवचनो)
४२. ऐजन. पान नं- १९४.
४३. विजीगिषु जीवनवद . (प.पू.पाडुंरंगशास्त्री के संकलित प्रवचनो)
४४. श्रीमद्भगवदगीता, ९/३०.
४५. श्रीमद्भगवदगीता, १८/६५.
४६. श्रीमद्भगवदगीता, ७/७.
४७. ऐजन. पान नं- १९४.
४८. श्रीनारायणआचार्यजीकृत- भारतामृत.
४९. शिवमहि.स्त्रोतम् श्लोक/ ३२.
५०. श्रीकृष्णाष्टकम्- श्लोक- १